काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

स्वतंत्रता दिवस पर कुलपति महोदय का उद्‌बोधन

15 अगस्त 2009

भारत राष्ट्र के त्रेसठवें स्वतंत्रता दिवस समारोह में आज उपस्थित गणमान्य अतिथिगण, भारतीय सशस्त्र सेनाओं एवं एन0 सी0 सी0 से आये प्रहरी मित्र, शिक्षक वृन्द, कर्मचारी साथी, प्रिय विद्यार्थियों तथा पत्रकार बंधुओं। आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनायें।

आज का दिन ऐतिहासिक दिन है। आज का दिन गौरवशाली दिन है। आज का दिन इतिहास के पन्नों को याद रखने वाला दिन है। आज का दिन स्वाभिमान, उत्साह एवं उल्लास से परिपूर्ण दिन है। आइये हम सब मिलकर आज के दिन की ऐतिहासिकता का स्मरण करते हुये गौरव का अनुभव करें और भारत मां के उन जाबांजों, उन शहीदों, उन स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का पुनीत स्मरण करें जिनकी कुर्बानी, जिनकी शहादत

की वजह से आज हम यह स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं। हम उन सभी शहीदों की शहादत को याद करते हुये उनकी स्मृति में अपना शीश नवाते हैं।

हमारा स्वतंत्र भारत अपनी आजादी के बासठ बसंत देख चुका है। इन बासठ वर्षों में आजाद भारत का यह तिरंगा उत्तरोत्तर ऊचां होता गया है। हमने विश्व में अनेक क्षेत्रों में अपना कीर्ति–पताका फहरायी है। हम आज भी विकास की राह पर तेजी से चल रहे हैं। हमने ज्ञान, विज्ञान, चिकित्सा और तकनीकी के अनेक क्षेत्रों में विश्व में नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं। भारतीय मेधा की अनुगूंज हमें विश्व के हर कोने में सुनाई देती है। परंतु जब हम अपने राष्ट्र की इन बासठ वर्षों की यात्रा पर नजर डालते हैं तो हमें लगता है कि अभी भी बहुत कुछ शेष है। हमें अभी और आगे बढ़ना है। बहुत सी समस्यायें हैं जो देश के सामने अपनी सम्पूर्ण विकरालता के साथ हमें दिखाई दे रहीं हैं। आतंकवाद रूपी रावण आज भी हमारा पीछा कर रहा है।

हिंसा, अशांति, असहिष्णुता और भांति भांति की संकीर्णतायें भी हमारा पीछा नहीं छोड़ रहीं हैं। गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा और कुस्वास्थ्य आदि से भी हमें अभी तक निजात नहीं मिल पाई है। पर्यावरण प्रदूषण रूपी आक्टोपस अपना आकार निरंतर बढ़ाता जा रहा है। महिलाओं पर अत्याचार अभी भी बंद नहीं हुये हैं। इसलिये आज का दिन एक ओर जहां उत्सव मनाने का दिन है वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय चिंतन एवं मंथन का भी दिन है। आइये आज के दिन हम सब मिलकर यह विचार करें कि महामना की देशभक्ति की शिक्षा का यह मंदिर भारत के विकास में कैसे योगदान दे सकता है? स्वतंत्रता आंदोलन में महती वैचारिक भूमिका निभाने वाला काशी हिन्दू विश्वविद्यालय कैसे आतंकवाद और पर्यावरण प्रदूषण को कम कर सकता है? आज के दिन हम यह भी विचार करें कि महामना पंडित मदन मोहन मालवीय, ऐनी बेसेंट तथा सर्वपल्ली राधाकृष्णन की वैचारिकी से अभिसंचित यह शिक्षा का भव्य मंदिर सामाजिक–आर्थिक

सशक्तिकरण की यज्ञशाला कैसे बन सकता है? आईये हम यह भी सोचें कि भारतीय संस्कृति से अनुप्राणित यह शिक्षालय अपनी भारत माता की सेवा प्राणप्रण से कैसे कर सकता है? भारतीय नारी की सुरक्षा और सम्मान में हमारा विश्वविद्यालय कैसे योगदान दे सकता है? संस्कारों का यह उपवन हमारी युवा पीढ़ी में संस्कारों की सुगंध कैसे फैला सकता है? मुझे लगता है कि आज के दिन हमें यह भी विचार करना चाहिये कि हमारे विश्वविद्यालय का, हमारे संपूर्ण शैक्षिक परिवेश का तथा हमारे संपूर्ण विश्वविद्यालय परिवार का इस महान राष्ट्र के उन्नयन में योगदान कैसे सुनिश्चित होगा?

साथियों! मैंने अभी–अभी अपने राष्ट्र के समक्ष विभिन्न चुनौतियों के परिपेक्ष्य में जो अपेक्षायें अपने आपसे और आप सबसे की हैं मुझे लगता है कि उन्हें पूरा करना असंभव नहीं है। हाँ कठिन जरूर है और इसलिये इन्हें पूरा करने के लिये हमें कठिन परिश्रम और निरंतर प्रयास करना होगा। हमें अपनी

ईश्वरप्रदत्त शक्तियों पर विश्वास रखते हुये स्पष्ट सोच एवं दूरदृष्टि के साथ आगे बढ़ना होगा। मुझे प्रसन्नता है कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय इस दिशा में प्रयासरत है।

आतंकवाद रूपी जहर को जड़ से समाप्त करने के लिये हमें शांति शिक्षा की आवश्यकता है। हमें आतंरिक शांति, शारीरिक शांति और बाह्य शांति को बनाये रखने के लिये योग, ध्यान, प्रणायाम एवं संस्कारों से ओतप्रोत मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता है। अपने विश्वविद्यालय में हम इन सभी विधाओं को प्रोत्साहित करने का प्रयास कर रहे हैं। हमारी कोशिश है कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर शांति का अग्रदूत कहलाये। इस हेतु हम विश्वविद्यालय में यूनेस्को चेयर आन पीस एजूकेशन स्थापित कराने की दिशा में काफी आगे बढ़ चुके हैं। हमारी सद्इच्छा है कि शांति, अहिंसा और प्रेम का संदेश देने वाला भारत आज भी इन क्षेत्रों में संपूर्ण विश्व की अगुवाई करे और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय शैक्षिक दृष्टि से इसका नेतृत्व संभाले।

साथियो! प्रदूषण के थपेड़े हमें प्रताड़ित कर रहे हैं चाहे वह जल प्रदूषण हो या फिर गंगा प्रदूषण, वायू प्रदूषण हो या शोर प्रदूषण। दिनोंदिन प्रदूषण का साम्राज्य बढ़ता जा रहा है। अनियोजित विकास तथा शहरीकरण ने हमें कहीं का नहीं छोड़ा है। अंधाधुंध वृक्षों की कटाई ने मौसम का मिजाज बदल दिया है। आज बादल हमसे रूँठ गये हैं। सावन सूखा चला गया है। पेयजल का संकट गहराता जा रहा है। तापमान में वृद्धि हो रही है। जलवायु में परिवर्तन हो रहे हैं। ऐसे में क्या शिक्षण संस्थाओं को अपना शैक्षिक कर्तव्यपालन नहीं करना चाहिये? क्या हमें मूकदर्शी बनकर बैठे रहना चाहिये? उत्तर है नहीं। हमें उपलब्ध ज्ञान, विज्ञान और देशज परंपरा के आधार पर न केवल युवा पीढ़ी को बल्कि संपूर्ण समाज और राष्ट्र को सही दिशा का बोध कराना चाहिये। साथियों मुझे प्रसन्नता है कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय इस दायित्वबोध का निर्वहन करते हुए पर्यावरण संरक्षण हेतु अनेक प्रयोग कर रहा है। पर्यावरण एवं सतत विकास संस्थान की

स्थापना इसी शैक्षिक कर्तव्यपालन का एक अंग है। आइये हम सब मिलकर इसमें और अधिक सक्रिय सहभागी बनें।

हमारे विश्वविद्यालय के संस्थापक परम पूज्य पंडित मदन मोहन मालवीय जी की देश भक्ति इस विश्वविद्यालय की रग–रग में रची–बसी है। आज हमें मालवीय जी के इस आदर्श को फिर से मूल मन्त्र बनाना है कि "शिक्षण एवं ज्ञानार्जन का उद्देश्य समुदाय एवं राष्ट्र का कल्याण है। वह ज्ञान जो समष्टि के किसी कार्य न आ सके, निश्चित ही निरर्थक है।" स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय मात्र उपाधियाँ देने वाली संस्था बनकर नहीं रह सकता बल्कि इसे तो सामाजिक पुनर्रचना, समवेत विकास एवं सामाजिक न्याय की ओर जन–मानस को ले जाने वाली ज्ञान संस्था बन कर उभरना है।

महामना हमेशा चाहते थे कि "विद्या की इस नर्सरी में ऐसे मानवीय पुष्प खिलें जो सच्चाई और ईमानदारी से अपने जीवन का निर्वहन करते हुये कलापूर्ण एवं सौन्दर्यमयी जीवन व्यतीत

करें। हमारे विद्यार्थी समाज में आदरणीय एवं विश्वासपात्र बनकर देशभक्ति से ओत–प्रोत होकर राष्ट्र की सेवा करें तथा जीवन को अलंकृत करें।" महामना की इस अपेक्षा को फलीभूत करने के उद्देश्य से ही काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने वैल्यू प्रमोशन पॉलिसी बनाने का निर्णय लिया है जिसके तहत हम मानवीय मूल्यों का संवर्धन एवं विकास करेंगे। मुझे विश्वास है कि जिस दिन भारतीय जनमानस में मानवीय मूल्यों के साथ–साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण व्याप्त हो जायेगा उस दिन सभी तरीके की सकीर्णतायें स्वमेव समाप्त हो जायेंगी।

आज भारत के समक्ष चुनौती है कि किस तरह से समाज के हर तबके को समानता एवं सामाजिक न्याय मिल सके एवं कैसे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की इच्छानुसार ''भीड़ के आखिरी आदमी के न केवल आसूँ पोछें जायें बल्कि उसे भी राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया से जोड़ा जा सके।" आज हम सभी शिक्षकों एवं

शिक्षार्थियों को मिलकर इस चुनौती को स्वीकार करना है और इस दिशा में साझा प्रयास करना है।

मेरे प्यारे विद्यार्थियों! आप महामना के मानस पुत्र हैं। महामना की विचारणा का अंश भी आपके अंदर है। आप अपने राष्ट्रगौरव से परिपूर्ण विचारों तथा ज्ञान–विज्ञान के साथ आगे बढ़ें। नये सिद्धाँतों को शिल्पित कर स्थापित करें। अपने क्रिया–कलाप और आदतों को आदर्शों में ढालें, यही काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का भाल है जिसकी ज्योत्सना से सारा विश्व प्रकाशित होगा। हमें विश्वास है कि भारत का भविष्य आपके हाथों में सुरक्षित है। मैं अपने युवा साथियों का आह्वाहन करता हूँ कि आप सभी अपने पुरूषार्थ को समृद्ध और समर्थ भारत के निर्माण में लगायें। ऐसा भारत जिसमें गरीबी, भुखमरी और बेरोजगारी का नामो निशान न हो। ऐसा भारत जो शांति, अहिंसा और प्रेम के लिए पुनः जाना जाए।

आइए हम सब मिलकर भारत के उज्जवल भविष्य की कामना करें।

जय हिन्द। जय हिन्द। जय हिन्द।